परिशिष्ट

प्रभु यीशु मसीह को सही रूप में पेश करने वाला राजदूत और फलवंत मसीही जन बनने में आपकी सहायता करने हेतु और कुछ विषय इस **परिशिष्ट** में जोड़ने की आवश्यकता है।

पहला विषय है बपतिस्मा। बाइबल के अनुसार बपतिस्मा लेते समय व्यक्ति को कुछ क्षणों के लिए पानी में डुबाया जाता है, फिर पानी से बाहर निकाला जाता है। यह प्रभु यीशु मसीह की आज्ञा के अनुसार किया जाता है जो उसने अपने चेलों को दी थी :

और उसने उनसे कहा, "तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो। जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा"।

यीशु ने उनके पास आकर कहा, "स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है। इसलिए तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो। और उन्हें सब बातें जो मैंने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओ। और देखो, मैं जगत के अन्त तक सदैव तुम्हारे संग हूं"।

बपतिस्मा के द्वारा नया विश्वासी सार्वजनिक रूप से यह जाहीर करता है और इस बात की पुष्टी करता है कि उसने यीशु को अपना उद्धारकर्ता और प्रभु स्वीकार किया है। बपतिस्मा की बाहरी क्रिया इस बात को दर्शाती है कि नए विश्वासी के जीवन में भीतरी तौर पर और आत्मिक तौर पर क्या हुआ है।

बाइबल के निम्नलिखित पद दर्शाते है कि विश्वास करने के बाद बपतिस्मा लेने का एक सामान्य अभ्यास उन दिनों में था: **पतरस ने उनसे कहा, "मन फिराओ, और तुममें से हर एक अपने अपने पापों की क्षमा के लिए यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले, तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे। इसलिए जिन्होंने उसका वचन ग्रहण किया उन्होंने बपतिस्मा लिया; और उसी दिन तीन हजार मनुष्यों के लगभग उनमें मिल गए "।**

परन्तु जब उन्होंने फिलिप्पुस की प्रतीति की जो परमेश्वर के राज्य और यीशु के नाम का सुसमाचार सुनाता था, तो लोग क्या पुरूष, क्या स्त्री बपतिस्मा लेने लगे ।

तब फिलिप्पुस ने अपना मुंह खोला, और इसी शास्त्र से आरम्भ करके उसे यीशु का सुसमाचार सुनाया। मार्ग में चलते चलते वे किसी जल की जगह पहुंचे, तब खोजे ने कहा, "देख, यहां जल है, अब मुझे बपतिस्मा लेने में क्या रोक है?" फिलिप्पुस ने कहा, "यदि तू सारे मन से विश्वास करता है तो हो सकता है।" उसने उत्तर दिया कि मैं विश्वास करता हूं कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है। तब उसने रथ खड़ा करने की आज्ञा दी, और फिलिप्पुस और खोजा दोनों जल में उतर पड़े, और उसने उसे बपतिस्मा दिया ।

इस पर पतरस ने कहा, "क्या कोई जल की रोक कर सकता है कि ये बपतिस्मा न पाएं जिन्होंने हमारे समान पवित्र आत्मा पाया है?" और उसने आज्ञा दी कि उन्हें यीशु मसीह के नाम में बपतिस्मा दिया जाए। तब उन्होंने उससे बिनती की कि वह उनके साथ कुछ दिन रहे"।

तब आराधनालय के सरदार क्रिसपुस ने अपने सारे घराने समेत प्रभु पर विश्वास किया; और बहुत से कुरिन्थी सुनकर विश्वास लाए और बपतिस्मा लिया ।

बपतिस्मा के द्वारा विश्वासी प्रभु यीशु के साथ उसकी मृत्यु, गाड़े जाने और जी उठने में एक हो जाता है।

क्या तुम नहीं जानते, कि हम जितनों ने मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया, तो उसकी मृत्यु का बपतिस्मा लिया? इसलिए उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गए, ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें ।

इसलिए आप बपतिस्मा लेने की प्रभु यीशु मसीह की आज्ञा का पालन करना चाहेंगे। प्रभु यीशु मसीह में दूसरों को बताने का यह अद्भुत तरीका है। प्रार्थना करें कि परमेश्वर आपको ऐसे विश्वासी भाई के पास ले जाए जो आपको बपतिस्मा दे सके, शायद वही व्यक्ति जिसने आपको यह पुस्तक दी है।

आपके लिए यह भी आवश्यक है कि आप नियमित रूप से प्रभु यीशु के अन्य विश्वासियों के साथ संगति रखें। प्रभु यीशु से प्रेम करनेवाले अन्य मसीही विश्वासियों के साथ संगति और वचन की सहभागिता आपको और उनको भी मजबूत बनाएगी। परमेश्वर ने मसीह में आपके लिए जो कुछ भी किया है उसके द्वारा अन्य लोग भी प्रोत्साहन पा सकते हैं, और परमेंश्वर ने दूसरों के जीवन में जो कार्य किया है उसके द्वारा आप प्रोत्साहन और आशीष पा सकते हैं।

जैसा कि आपने अध्याय सात में पढ़ा है कि किस रीति नए विश्वासी प्रतिदिन संगति और प्रार्थना, रोटी तोड़ने, वचन सुनने और सीखने, परमेश्वर की स्तुति गाने, एक दूसरे की सांसारिक एवं आत्मिक जरूरतों को पूरा करने हेतु और उन लोगों को सुसमाचार सुनाने हेतु इकट्ठा होते थे जिन्होंने प्रभु यीशु के विषय में सुना न था।

और परमेश्वर की स्तुति करते थे, और सब लोग उनसे प्रसन्न थे; और जो उद्धार पाते थे, उनको प्रभु प्रतिदिन उनमें मिला देता था।

इसलिए बन्दीगृह में पतरस की रखवाली हो रही थी, परन्तु कलीसिया उसके लिए लौ लगाकर परमेश्वर से प्रार्थना कर रही थी ।

विश्वासी विभिन्न समय में विभिन्न स्थानों में मिलते थे। वे कहाँ इकट्ठा होते यह महत्वपूर्ण नहीं था, परंतु वे ऐसा नियमित रूप से करते थे, खासकर इसलिए कि जो विश्वासी मजबूत थे वे कमजोरों की मदद कर सकें और जिनके पास परमेश्वर ने संसाधन दिए थे वे जरूरतमंदो की सहायता कर सकें।

इन दिनों में जिस भवन में लोग इकट्ठा होते हैं उस स्थान को चर्च कहा जाता है, परंतु बाइबल सिखाती है कि चर्च मसीह यीशु के विश्वासियों का झूण्ड़ है। कलीसिया का अर्थ है लोग, न कि भवन या घर जहाँ वे मिलते हैं।

"जिस परमेश्वर ने पृथ्वी और उसकी सब वस्तुओं को बनाया, वह स्वर्ग और पृथ्वी का स्वामी होकर हाथ के बनाए हुए मन्दिरों में नहीं रहता"।

यीशु ने कहा, **"क्योंकि जहां दो या तीन मेरे नाम पर इकट्ठा होते हैं, वहां मैं उनके बीच में होता हूं"।** जब आप प्रभु यीशु के नाम में आराधना करने, एक दूसरे की उन्नति करने और मसीही चालचलन में एक दूसरे को प्रोत्साहन देने हेतु इकट्ठा होंगे, तब परमेश्वर का आत्मा विशेष रूप से आपके मध्य कार्य करेगा।

यह स्मरण रखना भी महत्वपूर्ण है कि आप पवित्र आत्मा का मंदिर है। परमेश्वर अपनी आत्मा के द्वारा आप में वास करता है। वह प्रेमी परमेश्वर है। वह हमारे साथ व्यक्तिगत तौर पर रहता है। पवित्र आत्मा जो आपके भीतर वास करता है उसके प्रति संवेदनशील रहें, केवल उस समय भी जब आप अन्य विश्वासियों के साथ इकट्ठा होते हैं। परमेश्वर के आत्मा का आदर करें।

क्या तुम नहीं जानते कि तुम्हारी देह पवित्रात्मा का मन्दिर है, जो तुममें बसा हुआ है और तुम्हें परमेश्वर की ओर से मिला है, और तुम अपने नहीं हो? क्योंकि दाम देकर मोल लिए गए हो, इसलिए अपनी देह के द्वारा परमेश्वर की महिमा करो ।

अध्याय सात में आपने पढ़ा कि किस तरह पवित्र आत्मा ने प्रारंभिक मसीहियों के द्वारा कार्य किया था और जहाँ जहाँ वे गए वहाँ वहाँ उन्होंने अविश्वासियों पर प्रभु यीशु को प्रगट किया। वे प्रतिदिन ऐसा करते रहे। वे एकसाथ संगति रखते थे, एक दूसरे की जरूरतों को पूरा करते थे, एकदूसरे को प्रोत्साहन देते थे और बाहर जाकर प्रभु यीशु के सुसमाचार को औरों को बताते थे।

आपका जीवन भी अब ऐसा ही है: आपको वचन और काम में प्रभु यीशु को दूसरों पर प्रगट करना है। आप परमेश्वर के चुने हुए पात्र हैं जिसमें वह केवल वास ही नहीं करता, परंतु जिसके द्वारा वह वास करता है। जो प्रभु यीशु आपमें वास करता है वह आपके संपर्क में प्रतिदिन आनेवाले लोगों के लिए आशा है। आप विशेष हैं और अपनी योजनाओं को और इच्छा को पृथ्वी पर पूरी करने हेतु परमेश्वर को आपकी जरूरत है।

पूर्ण रूप से अपने आपको परमेश्वर के लिए दे दीजिए। यह हमेशा ही आसान नहीं होगा, परंतु यह एक अनमोल अवसर है। आप अन्य कई मसीही लोगों के समान सताए जाएँगे, परंतु जो महिमा आपमें प्रगट होगी वह किसी भी प्रकाश से और क्षणिक विपत्ति से कई गुना बहुमूल्य होगी। प्रभु यीशु के महान सेवक के शब्द पढ़ें:

क्योंकि हम अपने को नहीं, परन्तु मसीह यीशु को प्रचार करते हैं कि वह प्रभु है; और अपने विषय में यह कहते हैं, कि हम यीशु के कारण तुम्हारे सेवक हैं। इसलिए कि परमेश्वर ही है, जिसने कहा कि अन्धकार में से ज्योति चमके; और वही हमारे हृदयों में चमका कि परमेश्वर की महिमा की पहचान की ज्योति यीशु मसीह के चेहरे से प्रकाशमान हो। परन्तु हमारे पास यह धन मिट्टी के बरतनों में रखा है, कि यह असीम सामर्थ हमारी ओर से नहीं, वरन् परमेश्वर ही की ओर से ठहरे।

हम चारों ओर से क्लेश तो भोगते हैं, पर संकट में नहीं पड़ते; निरुपाय तो हैं, पर निराश नहीं होते; सताए तो जाते हैं, पर त्यागे

नहीं जाते; गिराए तो जाते हैं, पर नाश नहीं होते। हम यीशु की मृत्यु को अपनी देह में हर समय लिए फिरते हैं, कि यीशु का जीवन भी हमारी देह में प्रगट हो। क्योंकि हम जीते जी सर्वदा यीशु के कारण मृत्यु के हाथ में सौंपे जाते हैं कि यीशु का जीवन भी हमारे मरनहार शरीर में प्रगट हो। और मृत्यु तो हम पर प्रभाव डालती है, और जीवन तुम पर।

और इसलिए कि हममें वही विश्वास की आत्मा है, (जिसके विषय में लिखा है कि मैंने विश्वास किया, इसलिए मैंने कहा) इसलिए हम भी विश्वास करते हैं, इसी लिए बोलते हैं। क्योंकि हम जानते हैं कि जिसने प्रभु यीशु को जिलाया, वहीं हमें भी यीशु में भागी जानकर जिलाएगा, और तुम्हारे साथ अपने सामने उपस्थित करेगा। क्योंकि सब वस्तुएं तुम्हारे लिए हैं, ताकि अनुग्रह बहुतों के द्वारा अधिक होकर परमेश्वर की महिमा के लिए धन्यवाद भी बढ़ाए। इसलिए हम हियाव नहीं छोड़ते; यद्यपि हमारा बाहरी मनुष्यत्व नाश भी होता जाता है, तौभी हमारा भीतरी मनुष्यत्व दिन प्रतिदिन नया होता जाता है।

"क्योंकि हमारा पल भर का हलका सा क्लेश हमारे लिए बहुत ही महत्वपूर्ण और अनन्त महिमा उत्पन्न करता जाता है। और हम तो देखी हुई वस्तुओं को नहीं, परन्तु अनदेखी वस्तुओं को देखते रहते हैं, क्योंकि देखी हुई वस्तुएं थोड़े ही दिन की हैं, परन्तु अनदेखी वस्तुएं सदा बनी रहती हैं"।

इसलिए जब हम पर विपत्ति, और परीक्षा आएगी तब :

"विश्वास के कर्ता और सिद्ध करनेवाले यीशु की ओर ताकते रहें; जिसने उस आनन्द के लिए जो उसके आगे धरा था, लज्जा की कुछ चिन्ता न करके, क्रूस का दुख सहा; और सिंहासन पर परमेश्वर के दाहिने जा बैठा"।

"हे मेरे भाइयो, जब तुम नाना प्रकार की परीक्षाओं में पड़ो, तो इसको पूरे आनन्द की बात समझो, यह जानकर कि तुम्हारे विश्वास के परखे जाने से धीरज उत्पन्न होता है। परंतु धीरज को अपना पूरा काम

करने दो कि तुम पूरे और सिद्ध हो जाओ और तुममें किसी बात की घटी न रहे"।

यत्नशीलता हमारे मसीही जीवन का सबसे महत्वपूर्ण भाग है। इस गुण को हमें अपने जीवन में बढ़ाना है क्योंकि यत्नशीलता के बिना हमारा विश्वास पवित्र और सिद्ध नहीं होगा।

हम भले काम करने में हियाव न छोड़ें, क्योंकि यदि हम ढीले न हों, तो ठीक समय पर कटनी काटेंगे ।

इसलिए अपना हियाव न छोड़ो क्योंकि उसका प्रतिफल बड़ा है। क्योंकि तुम्हें धीरज धरना अवश्य है, ताकि परमेश्वर की इच्छा को पूरी करके तुम प्रतिज्ञा का फल पाओ ।

प्रभु यीशु के साथ प्रति दिन चलते समय आपका आधार हो : **केवल विश्वास जो प्रेम के द्वारा प्रभाव करता है ।** परिस्थितियाँ कितनी ही विपरीत क्यों न हों, आपको परमेश्वर के वचन पर विश्वास करना नहीं छोड़ना चाहिए, और आपको प्रेमपूर्ण जीवन बिताना नहीं छोड़ना है। आपको परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं से दूर नहीं होना है।

ऐसा समय आएगा जब आपको लगेगा कि परमेश्वर के वचन पर आपका जो विश्वास है वह काम नहीं दे रहा, परंतु यही सब कुछ छोड़कर भाग जाने के बजाय प्रभु में बने रहने का समय होगा। जब दूसरे लोग आपके साथ बुरा बर्ताव करते हैं तब उनसे प्रेम करना न छोड़ें और **बुराई से न हारो, परन्तु भलाई से बुराई को जीत लो ।**

निदान, प्रभु में और उसकी शक्ति के प्रभाव में बलवन्त बनो। परमेश्वर के सारे हथियार बान्ध लो, कि तुम शैतान की युक्तिओं के सामने खड़े रह सको। क्योंकि हमारा यह मल्लयुद्ध, लोहू और मांस से नहीं, परन्तु प्रधानों से, और अधिकारियों से, और इस संसार के अन्ध ाकार के हाकिमों से, और उस दुष्टता की आत्मिक सेनाओं से है जो आकाश में हैं।

इसलिए परमेश्वर के सारे हथियार बान्ध लो, कि तुम बुरे दिन में सामना कर सको, और सब कुछ पूरा करके स्थिर रह सको। इसलिए सत्य से अपनी कमर कसकर, और धार्मिकता की झिलम पहन कर, और पांवों में मेल के सुसमाचार की तैयारी के जूते पहन कर, और उन सब के साथ विश्वास की ढाल लेकर स्थिर रहो जिससे तुम उस दुष्ट के सब जलते हुए तीरों को बुझा सको, और उद्धार का टोप, और आत्मा की तलवार जो परमेश्वर का वचन है, ले लो। और हर समय और हर प्रकार से आत्मा में प्रार्थना, और बिनती करते रहो, और इसी लिए जागते रहो, कि सब पवित्र लोगों के लिए लगातार बिनती किया करो ।

याद रखें कि आप खोए हुए और मरनहार संसार के लिए प्रभु यीशु के राजदूत हैं। परमेश्वर की सेना में आप सिपाही हैं। **"विश्वास की अच्छी कुश्ती लड"। तुम परमेश्वर के हो; और तुमने उन पर जय पाई है; क्योंकि जो तुममें है, वह उससे जो संसार में है, बड़ा है ।परन्तु इन सब बातों में हम उसके द्वारा जिसने हमसे प्रेम किया है, जयवन्त से भी बढ़कर हैं ।**

"...उस पदार्थ को पकड़ने के लिए दौड़ा चला जाता हूं जिसके लिए मसीह यीशु ने मुझे पकड़ा था"।

अपने बैरियों से प्रेम रखो, (और जो तुम्हें श्राप देते हैं उन्हें आशीष दो, और जो तुमसे घृणा करते हैं उनका भला करो,) और अपने सतानेवालों के लिए प्रार्थना करो ।

देनेवाले बनें। परमेश्वर ने आपको जो कुछ दिया है उसे उनके साथ बाटें जिनके पास नहीं है। **तुमने सेंतमेंत पाया है, सेंतमेंत दो । लेने से देना धन्य है ।** जब आप किसी जरूरतमंद व्यक्ति को देखते हैं तब अपना हाथ न रोकें, उनकी जरूरत को प्रभु यीशु के नाम में पूरी करें।

मैं शीघ्र ही आनेवाला हूं । जब वह इस ससांर में था तब उसने अपने शिष्यों से कहा, **"मेरे पिता के घर में बहुत से रहने के स्थान हैं, यदि न होते तो मैं तुमसे कह देता; क्योंकि मैं तुम्हारे लिए जगह तैयार करने जाता हूं। और यदि मैं जाकर तुम्हारे लिए जगह तैयार करूं, तो फिर आकर तुम्हें अपने यहां ले जाऊंगा, कि जहां मैं रहूं वहां तुम भी रहो"।**

इसलिए जब तुम मसीह के साथ जिलाए गए, तो स्वर्गीय वस्तुओं की खोज में रहो, जहां मसीह वर्तमान है और परमेश्वर के दाहिनी ओर बैठा है। पृथ्वी पर की नहीं, परन्तु स्वर्गीय वस्तुओं पर ध यान लगाओ। क्योंकि तुम तो मर गए, और तुम्हारा जीवन मसीह के साथ परमेश्वर में छिपा हुआ है। जब मसीह जो हमारा जीवन है, प्रगट होगा, तब तुम भी उसके साथ महिमा सहित प्रगट किए जाओगे ।

परमेश्वर का वचन

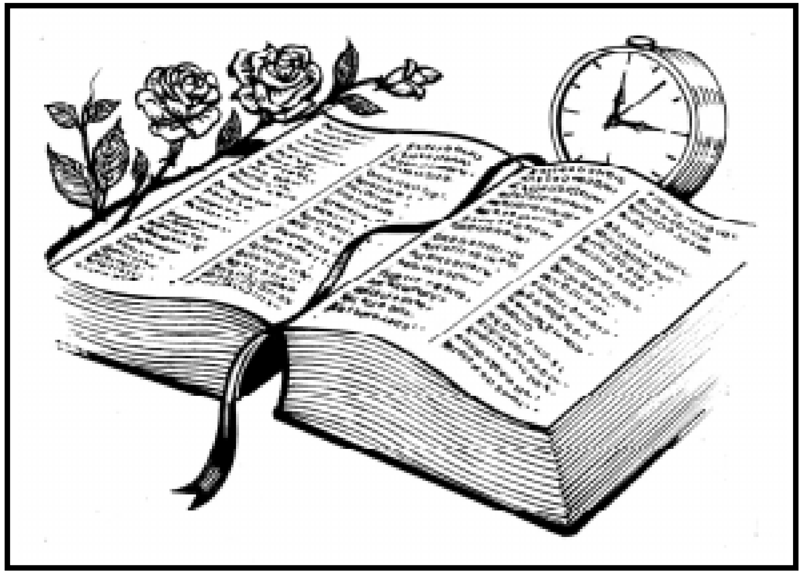

परमेश्वर का लिखित वचन बाइबल इस संपूर्ण पुस्तक का आधार है। इस पुस्तक में लिखी हुई प्रत्येक बात परमेश्वर के वचन में लिखे हुए सत्य पर आधारित है। बाइबल मानवजाति के लिए परमेश्वर का अपना लिखित वृतान्त, विवरण और प्रकाशन है।

बाइबल से लिए गए कई वचन इस पुस्तक में उपयोग किए गए हैं। इस पूरे पुस्तक में ये वचन मोटे अक्षरों में दिए गए हैं। उन्हें फिर पढ़ते समय बाइबल के पदों पर, जो कि परमेश्वर का वचन है, ध्यान दें।

"परंतु पहले यह जान लो कि पवित्र शास्त्र की कोई भी भविष्यद्वाणी किसी के अपने ही विचारधारा के आधार पर पूर्ण नहीं होती। क्योंकि कोई भी भविष्यद्वाणी मनुष्य की इच्छा से कभी नहीं हुई, परंतु भक्त जन पवित्र आत्मा के द्वारा उभारे जाकर परमेश्वर की ओर से बोलते थे"।

और बालकपन से पवित्र शास्त्र तेरा जाना हुआ है, जो तुझे मसीह पर विश्वास करने से उद्धार प्राप्त करने के लिए बुद्धिमान बना सकता है। हर एक पवित्र शास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, और समझाने, और सुधारने, और धर्म की शिक्षा के लिए लाभदायक है। ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने, और हर एक भले काम के लिए तत्पर हो जाए ।

परमेश्वर ने जिन लोगों को अपने वचन लिखने और बोलने के लिए चुना वे प्रत्यक्ष रूप से पवित्र आत्मा से चलाए गए थे, और उसने अपने वचन उन में फूँके। बाइबल मनुष्य का नहीं, परंतु परमेश्वर का वचन है, और यद्यपि परमेश्वर ने अपने वचन को लिखने के लिए मनुष्य का उपयोग किया, फिर भी वह कभी मिटेगा नही। जैसे परमेश्वर सनातन है वैसे उसका वचन सनातन है।

"हे यहोवा, तेरा वचन, आकाश में सदा तक स्थिर रहता है"।

"आकाश और पृथ्वी टल जाएंगे, परन्तु मेरी बातें कभी न टलेंगी"।

"घास तो सूख जाती, और फूल मुर्झा जाता है; परन्तु हमारे परमेश्वर का वचन सदैव अटल रहेगा"।

"ईश्वर का एक एक वचन ताया हुआ है; वह अपने शरणागतों की ढाल ठहरा है"।

"क्योंकि परमेश्वर का वचन जीवित, और प्रबल, और हर एक दोधारी तलवार से भी बहुत चोखा है, और जीव, और आत्मा को, और गांठ गांठ, और गूदे गूदे को अलग करके, वार पार छेदता है; और मन की भावनाओं और विचारों को जांचता है"।

"जितनी बातें पहले से लिखी गई, वे हमारी ही शिक्षा के लिए लिखी गई है कि हम धीरज और पवित्र शास्त्र की शान्ति के द्वारा आशा रखें"।

सबसे महत्वपूर्ण पुस्तक जो आपको पढ़नी है वह है परमेश्वर का वचन। इस पुस्तक को बारबार पढ़ते और अध्ययन करते समय आप बाइबल से सच्चाई की नींव बनाना आरंभ करेंगे। ये वचन इस पुस्तक में मोटे अक्षरों में लिखे गए हैं, परंतु हम आपको नये नियम की पुस्तक देना चाहते हैं। परमेश्वर के इस लिखित वचन में प्रभु यीशु के जन्म से आरंभ करके और कई बातें लिखी गई हैं।

"सच्चा आनंद आपका हो सकता है" यह पुस्तक परमेश्वर का वचन नहीं है, फिर भी इसमें बाइबल से कई पद दिए गए हैं। हम आपको प्रोत्साहित करते हैं कि आप हमें पत्र लिखकर नये नियम की एक प्रति मंगवा लें जो हम आपको विनामुल्य भेजेंगे।

आपको अगले पृष्ठ पर "ऑर्डर फॉर्म" मिलेगा। उसे कृपया पूरा कर हमें डाक द्वारा भेजें। हम आपको विनामुल्य नया नियम भेजेंगे। प्रभु यीशु में मजबूत होने में और उसे अधिक निकटता से जानने में यह पुस्तक आपकी सहायता करेगी।

ऑर्डर फॉर्म में इस पुस्तक की और भी प्रतियाँ विनामुल्य पाने के लिए जानकारी दी गई है, ताकि आप उसे अपने परिवार, मित्र और प्रतिदिन मिलनेवाले लोगों को दे सकें।

इस पुस्तक के द्वारा दूसरे भी सहायता पाएँगे। दूसरों को प्रभु यीशु को जानने में मदत करने हेतु इस पुस्तक का आप उपयोग कर सकते हैं।

इस पुस्तक के अंतिम दो पन्नों में उद्धार के लिए परमेश्वर की योजना संक्षेप में बतायी गई है। प्रभु यीशु को अपना उद्धारकर्ता स्वीकार कर दूसरों का परमेश्वर से मेल कराने हेतु आप इसका उपयोग कर सकते हैं। जब आप प्रभु यीशु के द्वारा उनके सिरजनहार से सही रिश्ता स्थापित करने में उनकी सहायता करेंगे, वह आपके मसीही जीवन सबसे अर्थपूर्ण समय होगा। आपके इस प्रयास में परमेश्वर आपको आशीषित करें।

आर्डर फॉर्म

कृपया मुझे नए नियम की विनामूल्य प्रति, और सच्चा आनंद आपका हो सकता है नामक पुस्तक की ________ प्रतियाँ भेजें। (आप जितनी प्रतियाँ चाहते हैं उतनी मंगवाएँ, हम उन्हें भेजने का प्रयास करेंगे।)

नामः ____________________

पताः ____________________

____

शहरः ____________________

राज्यः ____________________

कोड क्रमांकः ____________________

देशः ____________________

उम्रः ____________________

SOUTH ASIA CO-ORDINATOR
DenSu Ministries
P.O. BOX No: 969,
PERAMBUR BARRAACKS,
CHENNAI - 600 012

हमारा ई–मेल नंबर :
E-mail: southasia@densu.com

इस फॉर्म के दूसरे हिस्से में आपको यह पुस्तक कैसे मिली और इसके द्वारा आपको कैसे सहायता प्राप्त हुई यह हमें लिखकर भेजें। और यह भी बताएँ कि आप इस पुस्तक को कैसे और कहाँ देना चाहते हैं ताकि दूसरे प्रभु यीशु को जानें।

उद्धार के लिए परमेश्वर की योजना

इस संसार के सिरजनहार ने आपको इस योग्यता के साथ सिरजा है कि परमेश्वर के साथ विश्वास का निकटतम रिश्ता अपनाने के द्वारा आप वास्तव में आनंदित हो सकते हैं। परंतु आपने तथा सारी मानवजाति ने अपना ही रास्ता चुन लिया था, आपने उस विश्वास को त्याग दिया था और परमेश्वर से दूर जीवन बिता रहे थे।

शैतान ने मानवजाति की परीक्षा ली, उसने परमेश्वर के चरित्र के विषय में झूठ कहा, और परमेश्वर पर अविश्वास करने हेतु, उसके विरोध में पाप करने हेतु उसने मानवजाति को सम्मोहित किया। पाप, अविश्वास और अनाज्ञाकारिता ने मानवजाति की खुशी, शांति और सच्चे आनन्द को उससे छीन लिया जो परमेश्वर चाहता था कि उसे मिले।

पाप के कारण मनुष्य के जीवन में परमेश्वर से जो दूरी आयी उसके द्वारा मनुष्य के जीवन में खालीपन और अधूरापन आया है जिसे

परमेश्वर के अलावा और किसी भी बात से नहीं भरा जा सकता। सदियों से, मनुष्य ने इस खालीपन को संसार की भली और बुरी वस्तुओं से, ध ार्म से भर देने का प्रयास किया है, परंतु फिर भी वह उस खालीपन, भय और अकेलेपन को अनुभव करता रहा है, वह बोझ से दबा हुआ और उलझन से भरा हुआ है।

परमेश्वर ने मनुष्य जाति से प्रेम करना नहीं छोड़ा। उसे उसने अपने स्वरूप और समानता में बनाया था। उसने अपने पुत्र प्रभु यीशु मसीह के द्वारा मनुष्य जाति के लिये परमेश्वर के पास लौटने का और उसकी मूल योजना की ओर लौटने का मार्ग तैयार किया।

"क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए। परमेश्वर ने अपने पुत्र को जगत में इसलिए नहीं भेजा कि जगत पर दण्ड की आज्ञा दे, परन्तु इसलिए कि जगत उसके द्वारा उद्धार पाए"।

यीशु ने उससे कहा, "मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूँ; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता"।

जो पाप से अज्ञात था, उसी को उसने हमारे लिए पाप ठहराया, कि हम उसमें होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएं ।

"इसलिए कि मसीह ने भी, अर्थात् अधर्मियों के लिये धर्मी ने पापों के कारण एक बार दुख उठाया, ताकि हमें परमेश्वर के पास पहुंचाए"। "इसी कारण मैंने सब से पहले तुम्हें वही बात पहुंचा दी, जो मुझे पहुंची थी, कि पवित्र शास्त्र के वचन के अनुसार यीशु मसीह हमारे पापों के लिए मर गया, और गाड़ा गया; और पवित्र शास्त्र के अनुसार तीसरे दिन जी भी उठा"।

प्रभु यीशु आपके लिए मर गया, ताकि आपको पापों की क्षमा प्राप्त हो, आपके सिरजनहार परमेश्वर के साथ आपका सही रिश्ता हो और

आप अब और हमेशा के लिए प्रभु यीशु के द्वारा सच्चे आनन्द का अनुभव करने पाएँ।

यीशु ने कहा, "मैं इसलिए आया कि वे जीवन पाएं, और बहुतायत से पाएं"।

"हे सब परिश्रम करनेवालो और बोझ से दबे हुए लोगो, मेरे पास आओ; मैं तुम्हें विश्राम दूंगा। मेरा जूआ अपने ऊपर उठा लो, और मुझ से सीखो, क्योंकि मैं नम्र और मन में दीन हूँ; और तुम अपने मन में विश्राम पाओगे"।

यीशु ने कहा, "मैं जगत में ज्योति होकर आया हूँ ताकि जो कोई मुझ विश्वास करे, वह अन्धकार में न रहे"।

क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है ।

परन्तु जितनों ने उसे ग्रहण किया, उसने उन्हें परमेश्वर की सन्तान होने का अधिकार दिया, अर्थात् उन्हें जो उसके नाम पर विश्वास रखते हैं ।

कि यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे और अपने मन से विश्वास करे कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा ।

क्योंकि जो कोई प्रभु का नाम लेगा, वह उद्धार पाएगा ।

आप इस प्रार्थना के द्वारा प्रभु यीशु को इसी समय पुकार सकते हैं और उसे अपना उद्धारकर्ता स्वीकार कर सकते हैं।

प्रिय प्रभु,

मैं विश्वास करता/करती हूँ कि प्रभु यीशु मेरे पापों के लिए मरा और आपने उसे मरें हुओं मे से जिलाया। आपका बेटा आपने मेरे

लिए दिया इसलिए आपका धन्यवाद हों। मैं इसी समय प्रभु यीशु के नाम को पुकारता/पुकारती हूँ और उसे अपना उद्धारकर्ता और मेरे जीवन का प्रभु स्वीकार करता/करती हूँ।

आपने मुझे मेरे पापों से बचाया और आपके साथ मेरा सही रिश्ता कायम किया। मेरी सहायता कीजिए कि मैं प्रतिदिन आपको बेहतर तरीके से जान सकूँ और हर बात में आपको प्रसन्न करनेवाला जीवन बिताऊँ। मैं अपने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आप पर भरोसा करना चाहता/चाहती हूँ और आपकी आज्ञा का पालन करना चाहता/ चाहती हूँ।

यीशु के नाम में

आमीन!